

चातुर्मास २०२६ के लिए वैयक्तिक साधनाएँ

जय शंकर प्रिय साधकगण,

गुरुपूर्णिमा (आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा, २९ जुलाई २०२६) के पावन दिवस से प्रारंभ होकर भाद्रपद पूर्णिमा (२६ सितंबर २०२६) तक चलने वाला चातुर्मास, आध्यात्मिक साधना एवं तपश्चर्या के लिए एक अमूल्य अवसर प्रदान करता है।

परम पूज्य श्रीमत् सद्योजात शंकराश्रम स्वामीजी की कृपा एवं मार्गदर्शन से यह अवधि साधना के लिए विशेष रूप से फलदायी बन जाती है। वर्षा ऋतु अपने साथ एक विशिष्ट 'स्निग्धता' लेकर आती है। वातावरण की ऐसी सघनता, जो स्वाभाविक रूप से साधकों को अंतर्मुखी, ध्यानमग्न तथा आत्मचिंतनशील बनने के लिए प्रेरित करती है।

आध्यात्मिक उन्नति के लिए यह समय भौतिक ऊर्जा को आध्यात्मिक साधना की ओर प्रवाहित करने हेतु अत्यंत अनुकूल माना गया है।

इस वर्ष परम पूज्य श्रीमत् सद्योजात शंकराश्रम स्वामीजी श्रीमत् अनंतेश्वर मंदिर, विठ्ठल में चातुर्मास्य व्रत का पालन कर रहे हैं।।

आइए, इस चातुर्मास में अपनी आध्यात्मिक उन्नति, मठ एवं समाज के कल्याण के लिए निम्नलिखित साधनाओं का संकल्प लें।

निम्नलिखित साधनाओं में से किसी एक अथवा सभी का पालन किया जा सकता है -

१. अपने दैनिक मंत्र-जप की मालाओं की संख्या दुगुनी करें।
२. प्रतिदिन श्रीमद्भगवद्गीता के दो अध्यायों का पाठ करें। प्रथम दिन अध्याय १ एवं २, द्वितीय दिन अध्याय २ एवं ३, तृतीय दिन अध्याय ३ एवं ४ ... इसी प्रकार आगे क्रमशः पाठ करें।
३. साधना पञ्चकम् स्तोत्र का पाठ करें (श्री चित्रापुर स्तुतिमंजरी २०२५, पृष्ठ १२४)।

टिप्पणी: चातुर्मास की ये वैयक्तिक साधनाएँ साधकों की नित्य साधना एवं परिज्ञानलहरी साधनाओं के अतिरिक्त हैं।

साधना-संबंधी संसाधन यहाँ उपलब्ध हैं: - <https://www.chitrapurmath.net/site/sadhana-resource>

सेवा में,

डॉ. चैतन्य गुलवाड़ी

धर्मप्रचारक, श्री चित्रापुर मठ

परिज्ञानलहरी कोर टीम की ओर से